ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 13, Issue 04, April 2023 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

बौद्ध शिक्षा प्रणाली के अनुसार आत्मानुशासन

डॉ. बी.के. गुप्ता, (प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष)
वन्दना सिंह, शोधकर्त्री
जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, बाराबंकी (उ.प्र.)

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन में बौद्ध शिक्षा प्रणाली के अनुसार आत्मानुशासन को वर्णित किया गया है।वर्तमान शिक्षा में बालक को व्यवहारिकता की कसौटी लाना शिक्षा का उद्देश्य हो गया है। परन्तु कुछ ऐसी परिस्थितियाँ होती हैं जहाँ पर बौद्ध शिक्षा की अनुशासन व्यवस्था बहुत ही सार्थक सिद्ध हो सकती है। मनुष्य के आचार–विचार, नैतिकता एवं स्वस्थ समाज के निर्माण में बौद्ध शिक्षा में उल्लिखित अनुशासन की व्यवस्था वर्तमान समय में उपयोगी एवं प्रासंगिक है।बौद्ध कालीन शिक्षा में अनुशासन आदर्शवाद की भांति था, परन्तु ज्यादातर बौद्ध शिक्षा में आत्मानुशासन की बात की गयी है।**बौद्ध शिक्षा प्रणाली में** कठोर चरित्र सम्बन्धी अनुशासन एवं नैतिक अनुशासन को अत्यधिक महत्वपूर्ण माना गया है।

प्रस्तावना

किसी भी समाज के सर्वांगीण विकास हेतु शिक्षा प्रथम आवश्यकता है। शिक्षा का स्तर ही सामाजिक व सांस्कृतिक प्रगति का द्योतक है। ऐतिहासिकरूप से प्राचीनकाल से वर्तमान समय तक शिक्षा ने समस्त मानव समाज का पथइस प्रकार प्रशस्त किया है कि उसकी अमिट छाप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मेंदृष्टिगोचर होती है। इस प्रकार शिक्षा की प्रक्रिया आदिकाल से मानव सभ्यता के साथ जुड़ी हुई है तथा मानव जीवन की सहायक रही है। जैसे–जैसे समाज मेंशिक्षा की आवश्यकता में वृद्धि होती गई वैसे–वैसे शिक्षा का औपचारिक स्वरूप विद्यालयों के रूप में समाज में स्थापित होता गया। शिक्षा आचार मीमांसा का मूल साधन है। प्रत्येक दृ ष्टिकोण से शिक्षा मनुष्य के हित की मांग करती है। ऐसे ही उदाहरण हमें बौद्ध काल शिक्षा के स्वरूप में मिलता है। उस समय के महान गणितज्ञ, चिकित्सक, ज्योतिष तथा आचार्य आर्यभट्ट, बराहमिहिर, नागार्जुन तथा धन्वन्तरि आदि महान व्यक्तियों ने ज्ञान तथा शिक्षा व्यवस्था को सही दिशा में प्रभावित किया। अतः हम कह सकते हैं कि बौद्धकाल में शिक्षा निश्चित रूप

से एक समुन्नत अवस्था में थी। वर्तमान समय में हमारी शिक्षा व्यवस्था रोजगार उन्मुख तो है परन्तु इसमें भी कुछ हद तक सुधार तथा नैतिक मूल्यों के समावेश की आवश्यकता है। जिस प्रकार से वैदिक काल की शिक्षा की अनेक विशेषताएं वर्तमान समय में प्रासंगिक है ठीक उसी प्रकार से बौद्ध शिक्षा व्यवस्था भी वर्तमान समय में उपादेय सिद्ध हो सकती है।

बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध थे। उनकी शिक्षाएं एवं उपदेश बौद्ध धर्म ग्रन्थों में संकलित है। गौतम बुद्ध ने अपने द्वारा कोई नवीन धर्म या सम्प्रदाय स्थापित करने का प्रयास नहीं कथा न तो उन्होंने धार्मिक सिद्धान्तों तथा रूढ़ियों के विषय में चर्चा की और न ही नियमों एवं विधियों के विषय में, उन्होंने तो केवल जीवन के एक नवीन पथ की ओर संकेत किया, सदगुणों के इस मार्ग पर चलने से प्रत्येक व्यक्ति जीवन तथा मरण के बन्धन से मुक्ति पा सकता है। उनके उपदेशों का आधार आत्मा कार्य तथा आचार विचार की पवित्रता है। उन्होंने वेदों की प्रमाणिकता और अपौरुषेयता को अस्वीकार किया। यज्ञों में पशुबलि जैसी हिंसात्मक प्रवृत्तियों की निन्दा की तथा अर्थहीन धार्मिक विधियों एवं अनुष्ठानों का घोर विरोध किया। जाति प्रथा तथा ब्राह्मणों के में प्रभुत्व को चुनौती दी विष्व का सृजन करने वाले ईश्वर में संदेह प्रकट किया। आत्मा और परमात्मा के झगड़े में वे नहीं पड़े। उनके मतानुसार अपने स्वयं के विकास के लिए व्यक्तिगत श्रम और सात्विक जीवन ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। जिस सात्विक तथा सदाचारपूर्ण मार्ग को उन्होंने सुझाया है वह व्यवहारिक नैतिक गुणों का एक समूह है। यह विवेकशील है। अतएव बौद्ध धर्म धार्मिक क्रान्ति की अपेक्षा सामाजिक क्रान्ति ही अधिक है।

बौद्ध शिक्षा के अनुसार अनुशासन

बौद्ध धर्म अनुशासित जीवन जीने हेतु प्रेरित करता है। वास्तव में प्राचीन भारत के लोगों को बौद्ध धर्म ने एक सामाजिक दृष्टिकोण प्रदान किया, जिसका उपयोग उन्होंने पहले कभी नहीं किया था। कोई जाति नहीं, कोई असमानता नहीं, कोई श्रेष्ठता नहीं, सब समान है। यही बौद्ध दर्शन का धार्मिक नारा था। इस प्रकार महात्मा बुद्ध सामाजिक समालोचना के

उद्घाटक थे। उन्होंने मानव के राजनैतिक एवं सामाजिक विसम्बन्ध का विरोध किया जो जाति व्यवस्था में निहित था। बौद्ध धर्म मानव के अहम और लालच को समाप्त करने की आवश्यकता पर बल दिया। मानव जीवों के सम्मान एवं समानता पर आधारित करुणा और मैत्री इसके प्रमुख तत्व थे। अतः उन्होंने बल देकर कहा कि मानव का मानदण्ड गुण होना चाहिए, जन्म नहीं।

बौद्धों ने सभी लोगों को नियमों के अनुसरण करने का उद्देश्य दिया है और इसी को वे अनुशासन कहते हैं। बौद्धों की अनुशासन सम्बन्धी यह अवधारण आज लोकतन्त्रीय जीवन के लिए बड़ी आवश्यक है। लोकतंत्र की सफलता तो इसी तथ्य पर निर्भर है कि सभी लोग स्वयं के कर्तव्यों का पालन ईमानदारी और निष्ठा के साथ करें। अध्यापक तथा छात्र दोनों को संयमी जीवन की सुझाव देकर बौद्धों ने शिक्षा जगत को शुद्धता प्रदान की थी उसकी प्रासंगिकता वर्तमान में भी महसूस कि जा रही है। प्रायः आज के अध्यापक और शिक्षार्थी संयमी जीवन शैली जीना प्रारम्भ कर दें तो शिक्षा जगत की सभी बाधाये आने आप हल हो जायेगी।

बौद्ध दर्शन नैतिक अनुशासन का दर्शन है, यह आत्मानुशासन की अवधारणा पर आधारित था। भगवान् बुद्ध ने तत्व मीमांसा के विवेचन में समय लगाना अनुपयोगी समझा, क्योंकि इससे मनुष्य के जीवन की उन्नति में सहायता नहीं मिलती। बुद्ध का मानना था कि जिन विषयों के समाधन के लिए पर्याप्त प्रमाण न हों, उनके समाधन की चेष्टा व्यर्थ है। बुद्ध ने पूर्व–प्रचलित अनेक दार्शनिक मतों को युक्तिहीन और निराधर प्रतिपादित किया। उन्होंने अप्रत्यक्ष और संदिग्ध विषयों के बारे में तर्क का परहेज किया, क्योंकि उससे मुक्ति का मार्ग प्रशस्त नहीं होता।

बौद्धकालीन शिक्षा में आत्मानुशासन के लिए कठोर चरित्र सम्बन्धी नियम थे, जिनका पालन करना प्रत्येक सदस्य के लिए आवश्यक था। चरित्र शुद्धि, भाव शुद्धि और आत्मशुद्धि पर

अत्यधिक बल दिया जाता था। बौद्ध धर्म नैतिक आचरण पर बल देता था और सदाचार के आधार पर ही निर्वाण प्राप्ति सम्भव मानता था।

प्रत्येक भ्रमण एवं भिक्षुक को सादा जीवन व्यतीत करना होता था, कर्त्तव्यं शुद्धिं, सज्जनता, मानवता ही उनके जीवन के चरम आदर्श थे, सहिष्णुता, नियमितता, परोपकारिता उनका जीवन था। मन, वचन और कर्म से वे सत्यं तथा अहिंसा का पालन करते थे। छात्रों को कम–से–कम और सादे वस्त्र पहनने का आदेश था। वे कवल तीन वस्त्र धारण करते थे। उनका भोजन सादा होता था, दिन में तीन बार भोजन करते थे । उनके भोजन का समय निश्चित था। जिसके निकल जाने पर वे भोजन ग्रहण नहीं करते थे। भोजन के निमित्त वे निकटस्थ ग्रामों और नगरों में भिक्षा माँगते थे. आवश्यकता से अधिक भिक्षा ग्रहण नहीं करते थे। कभी–कभी वे उपासकों द्वारा भी भोजन के लिए आमन्त्रित किये जाते थे, किन्तु भोजन में वे उत्तेजक पदार्थ ग्रहण नहीं करते थे। आमोद–प्रमोद और मनोरंजन से दूर रहना अनिवार्य था। गुरू की सेवा करना श्रमण का कर्तव्य था, यदि कोई श्रमण गुरु का अनादर करता था या सेवा करने में अयोग्य सिद्ध होता था उसे संघ बहिष्कृत कर देता था। गुरू के प्रति शिष्य के व्यवहार के लिए कठोर नियम निर्धारित थे जिन्हें किसी दशा में भी तोड़ा नहीं जा सकता था। बौद्ध शिक्षा प्रणाली के अनुसार आत्मानुशासन के दस नियम निम्न थे–

1 जीव हत्या न करना
2 अशुद्ध आचरण न करना
3 असत्य न बोलना
4 असमय भोजन न करना
5 मादक वस्तुओं का प्रयोग न करना
6 पर निन्दा न करना
7 श्रृंगार की वस्तुओं का प्रयोग न करना
8 नृत्य एवं संगीत से दूर रहना

9 पराई वस्तु न लेना

10 सोना, चाँदी, हीरा, जवाहरात आदि कीमती वस्तु न लेना

इनके अतिरिक्त 8 नियमों का का पालन करना होता था, जो इस प्रकार है–

1 वृक्षों के नीचे वास करना

2 साधारण वस्त्र धारण करना

3 सात्विक भोजन का प्रयोग करना

4 भोजन के लिए भिक्षा मांगना

5 औषधि के रूप में गौ मूत्र का सेवन करना

6 चोरी और जीव हत्या न करना

7 अलौकिक शक्तियों का दावा न करना

8 स्त्री से यौन संबंध स्थापित न करना

इन नियनों के पालन में कोई भी भूल होने पर बिहार से निष्कासन कर दिया जाता था।अतः इसी कारण शिक्षा प्रणाली में आचरण सम्बन्धी सिद्धान्तों का पालन प्रारम्भिक शिक्षा से ही अनिवार्य था, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व में सदाचार का समावेश हो सके।

निष्कर्ष

बौद्ध दर्शन का अध्ययन करने के उपरान्त यह कहा जा सकता है कि इस दर्शन का प्रादुर्भाव अति प्राचीन है। बौद्ध कालीन शिक्षा में समाज को सशक्त बनाने के लिए मुख्यतः सत्य, अहिंसा, प्रेम, दया, त्याग, परोपकार, सहानुभूति, संयम, सेवा आदि का मनुष्य के हृदय में होना परम आवश्यक माना गया है। भगवान बुद्ध के सामाजिक एवं दार्शनिक विचारों में ''बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय'' का लोक कल्याणकारी आदर्श समाविष्ट है।बौद्ध दर्शन नैतिक एवं चारित्रिक अनुशासन पर विशेष बल देता था और सदाचार के आधार पर ही निर्वाण प्राप्ति

को सम्भव मानता था। अतः कहा जा सकता है कि बौद्ध दर्शन अनुशासन के माध्यम से व्यक्ति के अंदर तथा समाज में मूल्यों की स्थापना करना चाहता है।

संदर्भ सूची

- अग्रवाल, जे.सी.(2010). *शिक्षा के दार्शनिक, सामाजिक एवं आर्थिक आधार* . आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन.
- धर्मकीर्ति (2008). *बुद्ध का समाजदर्शन,* नई दिल्ली : सम्यक् प्रकाशन।
- जैन, पी.के. (2006). *भगवान गौतम बुद्ध,* मेरठः धीरज पॉकिट बुक्स।
- कोशाम्बी धर्मानन्द (1982). *भगवान बुद्ध जीवन और दर्शन,* इलाहाबाद : लोक भारतीप्रकाशन।
- कौर, सुरजीत (2019). गौतम बुद्ध के शैक्षिक दर्शन का अध्ययन। इंटरनेशनल जरनल ऑफ 360 डिग्री मेनेजमेन्ट, 7, 132–136.
- मनीष (2013). प्राचीन भारत में बौद्ध शिक्षा की भूमिका का अध्ययन। रिसर्च इन ह्यूमेनिटी, आर्ट्स एण्ड लिट्रेचर, 10(10), 163–165.
- पाण्डेय, अजय (2011).*बौद्ध संस्कृति का वैश्विक प्रभाव,* भोपाल : एकेडमिक बुक हाउस.
- पाठक, श्रीकान्त (1958).*जैनधर्म एवंबौद्ध धर्म,* अयोध्या : भवदीय प्रकाशन.
- रानी, लक्ष्मी (2019). भारतीय शिक्षा प्रणाली के विकास में बौद्ध धर्म की भूमिका का अध्ययन। जरनल ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, 8(5), 27–34.
- सांकृत्यायन, राहुल (2016). *बौद्ध संस्कृति,* नई दिल्ली : सम्यक प्रकाशन।
- शर्मा, चन्द्रधर (2014). *बौद्ध दर्शन और वेदान्त,* इलाहाबाद : स्टूडेण्ट्स फ्रेण्ड्स।
- शाक्य, राजेन्द्र प्रसाद (2016).*बौद्ध दर्शन,* मध्य प्रदेश : हिन्दी ग्रन्थ अकादमी.
- सिंह, मदन मोहन (1972). *बुद्धकालीन समाज और धर्म,* पटनाः हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
- सिंह, मीना (2009).*बौद्ध धर्म का लोक कल्याणकारी स्वरूप एक अध्ययन,* वाराणसी : भारती प्रकाशन.

- तारानाथ (1997). *भारत में बौद्ध धर्म का इतिहास*, पटना : अनु. रिडजिन लुण्डुप लामा।
- युंग (2003). आधुनिक विश्व के लिए बौद्ध धर्म शिक्षा का अध्ययन। जरनल ऑफ ह्यूमेनिटीज बुद्धिज्म, 4, 284–293.